मैं जानता हूँ

/ रवीन्द्रनाथ त्यागी

मैं जानता हूँ मेरी डोंगी अब बूढ़ी है
पर उसके पाल अभी पीले हैं
एकदम पीले;
जो भी आएगी हवा
झंझावात या प्रलय,
वे नही बदल सकेंगे पालों का रंग
वे नहीं तोड़ पाएँगे मेरा युवा हृदय,
आशा, प्रतीक्षा और उल्लास
कभी नही छोड़ेंगे मेरा साथ,
दिगन्त पर दमकेगी सदा
सुधियों की उज्जवल दीपशिखा.....
मैं जाता हूँ आज इस अन्तत यात्रा पर
मैं रौंदूँगा समुद्रों का उत्ताल वक्ष,
मैं पकड़ूँगा लहरों के जाल में फँसा चाँद;
मेरी यात्रा है एक कवि की यात्रा
यह यात्रा है उन कल्पनाओं की, उस स्वप्नों की, उन संकल्पो की
जो कभी समाप्त नहीं होते
कभी नहीं .....

मैं जानता हूँ
मेरी कविता सदा लिखी गई बालू पर,
समुद्र का अदम्य उत्ताल आक्रमण–
बहा देगा उस सबको जो मैंने जीवन भर लिखा;
मगर जब तक है रक्त की एक बूँद भी शेष
तब तक मैं लिखूँगा कविता
मै फिर लिखूँगा कविता
मै फिर लिखूँगा कविता
मै फिर लिखूँगा कविता.....

प्राणों के बाद भी दमकेगी
प्रतीक्षा के क्षणों की अदम्य गरिमा,
कृष्णपक्ष की भयंकर निशीथ में भी चमकेगी
सोलह कलाओं से भी अधिक पूर्ण गौरवर्णा पूर्णिमा ●

Scanned with CamScanner